रात्री क्लास ओमशान्ति 2-11-67.

कोई ने अनुभव ऐसा सुनाया हमको बाप का ज्ञान, योग बहुत अच्छा लगा। वह पढ़ाई तो बहुत डिफिकल्ट है। कितनी मेहनत, कितना समय, कितना खर्च पढ़ाई में लग जाता है। भक्ति में भी खर्चा लग जाता है। बाप तो नालेज फुल है ना। बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग में तुमने हर बात में बहुत तकलीफ देखी है। बाप बिलकुल सहज आकर पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं 84 का चक्र याद करना है। दूसरी सबजेक्ट है याद की यात्रा। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। पहले 2 सतोप्रधान थे। अब दुनिया ही तमोप्रधान है तो आत्मा भी तमोप्रधान बन गई है। तुम जानते हो हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन विश्व के मालिक बनते हैं। अति सहज है। माया का तूफान थोड़ा तंग करता है, याद न करने देती है। कुमारों को तो और सहज है। शादी के बाद स्त्री की याद, बच्चों की याद, वृद्धि होती जाती है। इन सब को भूलना पड़ता है। गुरू ने किया है वह भी अच्छा है। अकसर करके जो कुमार-कुमारियां हैं उनको सहज है। बाप कहते हैं इन सब देह सहित देह के सम्बन्ध को भूल अपन को आत्मा समझ वापस जाना है। इनको तुम ~~देखो~~ देखते हो तो दिल खुश होती है। कोई भी डिफिकल्टी हो तो बाप से राय लेनी चाहिए। गायन भी है किसकी दबी ~~रहेगी~~ रहेगी धूल में - - - इस समय का ही गायन है। चोर भी देखो कैसे डाका लगाते हैं। सफली होगी शाह, जो खर्चे नाम धनी के। अब धनी तो है बेहद का बाप जो तो दाता है, ऐसा न समझो हम बाबा को देते हैं। नहीं, बाप से तो लेते हैं। बच्चे जानते हैं बाप से हम वर्सा ले रहे हैं। खुद तो स्वर्ग पाते नहीं। तुम बच्चों को विश्व का महाराजा, महारानी बनाते हैं। भारत में महाराजा महारानी थे। और धर्मों में महाराजा महारानी नहीं कहते हैं। बाप भी कहते हैं तुमको ~~राजाओं का राजा, महाराजाओं का महाराजा [illegible] तुम बनेंगे इस पढ़ाई से वह बनाने के लिए~~ भी हो बाबा हम आप से पढ़ कर यह (ल० ना०) बनते हैं। सत्य नारायण की कथा भी है। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हैं। एम आबजेक्ट यही है नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी। अर्थात राजाओं का राजा बनने। पवित्रता है मुख्य। बाप ने समझाया है तुम अब अपवित्र होने कारण देवताएं कहलाय न सके। बाकी हो आदी सनातन देवी-देवता धर्म के। फिर आदी सनातन हिन्दू धर्म कह देते हैं। बाप कहते हैं अब मैं फिर बच्चों को मनुष्य से देवता बनाता हूँ। हैं मनुष्य पर आसुरी गुण वाले हैं। वह है दैवी गुण वाले। अब तुम लक्ष्मी आदि पूजा कर धन थोड़ ही मांगेंगे। पूजा करने की दिल न होगी। क्योंकि तुम पूज्य देवता बनते हो। वह सब है बाहर का ना। तुमको है अन्दर की खुशी। हम यह बन रहे हैं। तुम्हारी दीवाली समझ से होती है। भक्ति मार्ग को ही अज्ञान कहा जाता है। हर एक अपने पूछे कोई उल्टा काम तो नहीं किया। फिर ऐसा काम न करेंगे। श्रीमत से अपने को सुधारना है। जो फिर ऐसी भूल न हो। यह जरूरी रखना अच्छा है। ऐसे अपने ही घाटा और जमा का पता पड़ेगा। इसलिए बाप कहते हैं गफलत मत करो। कोई रांग काम न करना चाहिए। परन्तु माया कई से कराये देती है। तो अन्दर खाता है। चोट खाने से दिल खाती है। अब हम हार खायेंगे नहीं। तुमको भी अन्दर जांच रखनी है। कहाँ हम हार न खावें। सौदा तो बहुत सस्ता है। दीपमाला भी है। अपने से ही प्रतिज्ञा कर लो। हम कोई आसुरी कर्तव्य न करें यहाँ ही दैवी गुण धारण करनी है। समझते हो माया ने क्या बनाय दिया है। ड्रामा में हमारा ही पार्ट है। बहुत खुश होना चाहिए। देखो ना इस बाबा ने क्या किया। विश्व की बादशाही ~~[illegible]~~ मिलती है फिर यह क्या करेंगे। टाईम लगता है। अपनी सम्भाल रखनी है। अपना रोज का पोतामेल है फायदे वाला है। जितना याद में रहेंगे आज रुनी बहुत होगी। तुम्हारी आत्मा, तुम्हारा शरीर पूजा जाता है। बाप तो कहते हैं मेरी सिर्फ आत्मा की पूजा होती ~~होती~~ है। ते बाप कितना निरअंहकारीपना दिखाते हैं। बच्चों को भी ऐसा बहुत मीठा बनना चाहिए।

॥ ओम शान्ति ॥